

विचार बिन्दु

चापलूसी तीन घृणित दुर्गुणों से बही है—असत्य, दासत्व और विश्वासघात।

—अज्ञात

दांव वाले गेम के बढ़ते बाज़ार से समाज की चिंताएं बढ़ीं

जी एसटी कार्ड्सल द्वारा ऑनलाइन गेमिंग पर 28 प्रतिशत का टैक्स लगा दिये जाने से ऑनलाइन गेमिंग उद्योग परेशान है। भारत में फैंटेसी ऑनलाइन गेम्स हाल के वर्षों में काफी लोकप्रिय हुए हैं जिससे इन खेलों की लत लगाने को लेकर समाज में चिंताएं भी बढ़ी हैं। यह लत पश्चिम की बाजार की शक्तियां अपने मुनाफे के लिए लगा रही हैं। कई विदेशी कंपनियों ने भारतीय गेमिंग कंपनियों में निवेश किया हुआ है। उन्हें ही नये टैक्स को लेकर सबसे अधिक परेशानी है। आज के समय में जुआ अपने नये अवतार 'गेम' के नाम से डिजिटल जगत में उतरा है। इस नये अवतार में जुए को एक खूबसूरत नाम गेम दे दिया गया है जिससे मनोवैज्ञानिक तौर पर उसके अनैतिक होने का भान नहीं हो। उसे खेलने वालों या उसे खेलते देखने वालों के मन में कोई ग्लानि अथवा अपराधबोध नहीं हो। वैधानिक रूप से दांव लगाने पर प्रतिबंधों के होते हुए भी डिजिटल युग में वह अनेक रूप धारण कर लोगों को जेबों में संघ लगा रहा है। गेम को डिजिटल दुनिया में सबसे अधिक पैसा कमाने का जरिया भी बना दिया गया है। बाज़ार पर निगाह रखने वाली एजेंसियों का कहना है कि ऑनलाइन गेमिंग से होने वाली आय आपले दो साल में फिल्म मनोरंजन से होने वाली आय से भी अधिक हो जाने वाली है। पूर्व-कोविड महामारी दौर में 2019 में फिल्म मनोरंजन से 19,100 करोड़ रुपये की आय हुई थी। उसके मुकाबले तब ऑनलाइन गेमिंग से 6,500 करोड़ रुपये का आय गाए था। तब फिल्म मनोरंजन से होने वाली आय ऑनलाइन गेमिंग की आय से लगभग तीन गुना अधिक थी। कोरोना महामारी ने फिल्म मनोरंजन की आय में 62 प्रतिशत की गिरावट ला दी। इस साल फिल्म मनोरंजन की आय पूर्व-महामारी के स्तर 19,400 करोड़ रुपये तक फिर पहुंच जाने का अनुमान है, मगर इस बीच, ऑनलाइन गेमिंग व्यवसाय का तेजी से उठाव देखने को मिला है। चालू वर्ष में इस कारोबार को 16,700 करोड़ रुपये की आय होने का अनुमान है। बाज़ार के विश्लेषक इसकी आय दो साल बाद 2025 में 23,100 करोड़ रुपये तक पहुंच जाने की उम्मीद कर रहे हैं जो उस वर्ष के फिल्म मनोरंजन से होने वाली आय 22,800 करोड़ रुपये से अधिक होगी। फिल्म मनोरंजन की आय में मुख्य रूप से थिएटर रिलीज से मिलने वाला पैसा तथा ओटीटी जैसे प्लेटफॉर्म से प्रसारण अधिकार और सिनेमाघरों में होने वाली कमाई शामिल है। ऑनलाइन गेमिंग में रकमी और पोकर जैसे सीधे-सीधे जुआ वाले गेम से होने वाली आय शामिल है तो ई-स्पोर्ट्स और केजुअल गेमिंग के दुनिया-साथ विज्ञापन की आमदनी इसमें योगदान करती है। हाल ही में जारी फिककी की रिपोर्ट कहती है कि जिस प्रकार ऑनलाइन गेमिंग में लोगों की रुचि बढ़ रही है उसे देखते हुए मनोरंजन के इस प्रपञ्च में 2025 तक 19.5 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर देखी जा सकती है, जबकि फिल्म मनोरंजन के लिए यह वृद्धि दर 9.8 प्रतिशत पर सिमटी रहेगी। डिजिटल मीडिया और अन्य क्षेत्रों में वृद्धि के कारण समग्र मीडिया और मनोरंजन क्षेत्र में 10.5 प्रतिशत की वृद्धि होने की फिककी की उम्मीद है। दिलचस्प बात यह है कि सबसे कम वृद्धि डिटि प्रपञ्च में रहने की आशंका जताई गई है, जिसमें समग्र वृद्धि दर घटकर 3.7 प्रतिशत रह गई है। इस समय डिजिटल मीडिया में दांव लगाने के लिए प्रादुर्भाव को लुप्ताने की मुहिम लगी है। फिल्मों और क्रिकेट के बड़े सितारों से सजे पूरे-पूरे पेज के मुखपृष्ठ विज्ञापन अखबारों में नजर आये हैं। यह विज्ञापन एक प्रकार से गेम खेलने का निमंत्रण देते हैं, मगर अपने कानूनी तथा नैतिक बचाव में यह जरूर साथ में कह देते हैं कि रिस्क को जान कर, संभल कर खेलें। मगर कोई भी जुआ संभल कर नहीं खेला जाता। ऐसा हम पुरातन काल महाभारत काल से देखते आये हैं।

जुआ संभवतः उतना ही पुराना है जितनी कि मानव सभ्यता। भारतीय धर्म और इतिहास के अध्येता भी इस बात की तार्किक करते हैं कि वैदिक काल से ही जुए को एक प्रकार का खेल माना जाता रहा है। प्राचीन भारतीय शास्त्रों में इसे 'घृत क्रीडा' की संज्ञा मिलती है। इतिहासकार कहते हैं कि दांव लगाने वाले खेलों का भारतीय इतिहास कम से कम ढाई हजार साल पुरानी सिंधु सभ्यता तक तो आसानी से देखा जा सकता है। हालांकि इस सभ्यता की लिपि अब तक नहीं पढ़ी जा सकी है परंतु उत्खनन से प्राप्त पुरातात्विक अवशेषों के आधार पर यह यकीन से कहा जा सकता है कि तत्कालीन सिंधु सभ्यता के निवासियों के मनोरंजन के साधनों में एक, घृत क्रीडा भी होता था। सिंधु घाटी के पुरातात्विक खनन में गोटियां और पासे मिले हैं जिन पर एक से छह तक की



महावीर सिंह

प्रसिद्ध हास्य अभिनेताओं के सहारे कई टीवी चैनल्स से हर रोज कम से कम एकाध, हंसा-हंसा कर लोटपोट करने वाला शो दिखाते हैं। हास्य अभिनेताओं को अचानक अन्तर दूर देशों के बड़े चैनल्स पर शो दिखाने का मौका मिलता है तो देश से बाहर चले जाते हैं। जैसे अभी हाल ही में एक प्रसिद्ध हास्य कलाकार—, क्या नाम है— कोई शर्मा जी—कई दिनों के लिए बाहर देश चले गए तो बर्तकों का तो बुरा हाल हो गया, खाना पीना ही भूल बैठे—चैनल, विज्ञापन वालों का भी करोड़ों का नुकसान— सही में कहें तो से कोई एक हास्य कलाकार ऐसा भी होता है कि उसके बर्तकों—प्रशंसक उसे लगभग देवता की श्रेणी में मान लें लग जाते हैं—उसके हास्य को भी भक्त लोग ब्रह्मस्तव मानने लगते हैं।

इसी प्रकार हमारी कहानी के हास्य अभिनेता से भी उन चैनल्स वालों ने कुछ इस प्रकार से अनुनय-विनय किया— मालिक, आपको गैरहाजरी से धन्दा चोपट होने की कगार पर आ जाता है। दर्शन घट जाते हैं, टीआरपी एक्सेट की चोटी से धरातल पर आ जाती है। मजे हुए अभिनेता ने दूर देश से ही

इशारा कर दिया—लोट के आते ही, अगले 5, 7 दिन सुबह उठने के साथ से, लोत रात को सोयें तब तक शो दिखाया करूंगा, नुकसान से कई गुना ज्यादा की कमाई हो जाएगी—तैयारी पूरी रखना—भक्तों को इशारा कर देना। आखिर मेरे बिना तुम जारी, तुम्हारे बिना मैं भी तो फ़कीरी।

बात के पक्के अभिनेता ने जैसे ही देश की धरती पर पैर रखता है वादा निभाना शुरू कर देता है। चैनल्स की बल्ले-बल्ले शुरू और कमाई पहले से ज्यादा। एक समीक्षक टाइप के आदमी ने दो-चार चैनल्स वालों से पूछ लिया, खयों भाई, एक ही अभिनेता पर इतना क्यों निर्भर रहते हो—हास्य अभिनेताओं की कमी है क्या? ढूंढो एक मिलेगे हजार, एक से एक बढ़ कर।

सैकड़ों की संख्या में मिल जाएँ विभिन्न हास्यपूर्ण नामों वाली पोलिटिकल पार्टीज में धर्म की आड़ में चल रहे अधार्मिक संगठन तो इनकी भरमार है जो हास्य के साथ साथ लठबजी, तलवाक़ाजों में भी निपुण होते हैं। जैसे कोई कहता है हिन्दू धर्म कोई धर्म नहीं—कोई दूसरा कहता है कि ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ वगैरह वगैरह—कोई बात बात में किसी की भी पड़ोसी मुल्क में भेजने की बात करने लगता है, कई 70 साल पहले क्या हुआ, बताने लगता है तो कई तो सतयुगीन भूतकाल की अद्भुत गाथाओं में खो जाते हैं—कोई कमी नहीं है ऐसे महान हास्य कलाकारों की।

अखबारों, चैनल्स के विज्ञापनों में भी विज्ञापन दाताओं और मीडिया वालों का गूढ़ हास्य ही तो छिपा होता है। मीडिया वाले भी पक्की पकाई खाना चाहते हैं, खोजबीन को बाई बाई। आजकल अखबारों, टीवी चैनल्स पर कई सरकारों के एक-एक, दो-दो-पैजों के विज्ञापन हर रोज आ रहे हैं जिसमें अगले 3, 4 माहिनें में कई प्रदेशों को स्वर्ग

बनाने के वादे हैं—चार साल चाहे जनता से मिले भी नहीं हो—क्या इसमें हास्य नहीं दिखता?? दिखाता है किंतु विज्ञापन दाताओं की थैली दिमागों पर ताले लगा देती है जो —

समीक्षक कहता गया—इन पोलिटिकल पार्टीज व छह धार्मिक संगठनों में बाकायदा बेहतरीन हास्य कलाकार तैयार कर आगे बढ़ाए जाते हैं। रात और दिन हास्य कला की नवीनतम शिक्षा दी जाती है, वर्जिश करवाई जाती है। अखबार वालों, टीवी चैनल्स वालों को उनकी तरफ भी ध्यान देना चाहिए। कुछ दूसरे नए, उभरते और कलाकारों को मौका देना चाहिए, उनकी भी थोड़ी बहुत तो दुकान चले—आपके साथ साथ व आपके सहयोग से। समीक्षक कहता गया—झूठ के तड़के वाला हास्य ही ढूढ़ना हो तो सोशल मीडिया भरा पड़ा है, आजकल चुनौत के समय सरकारों, नेताओं द्वारा दिये जाने वाले विज्ञापन भरे पड़े हैं। मीडिया वाले करें थोड़ी मेहनत, निकालें इन में से भरपूर हास्य।

ओर तो ओर, कई बार तो बड़े-बड़े सदनों में जो बड़ी सभाएं जुड़ती हैं, बहस होती है, वहां भी हास्य ही हास्य दिखने लगता है। खबरनवीस थोड़ी मेहनत करें तब न!!!

चैनल वाले भी मजे हुए कलाबाज थे, बात को घूम कर वहां ले गए जहां से शुरू हुई थी और बोले, बात तो आपकी ठीक है। हास्य कलाकारों, हास्य की कमी नहीं किन्तु जब लोग जोनीवाकर, महुमूद, जगदीप, मुकरी को ही देखना चाहते हैं तो रामपाल को तो इंतजार करना ही पड़ेगा। छोटे-मोटे पार्टी प्रवक्ताओं, तथ्यांकित धर्म का चोला पहने संगठनों के प्रवक्ताओं को कोई क्या ओर क्यों सुनेगा जब सबसे बड़ा हास्य अभिनेता मनोरंजन के लिए सदैव सर्वत्र सहज उपलब्ध हो।

वैसे रामपाल और उसके समय वेकत भी हास्य कला के निपुण खिलाड़ी हैं किन्तु वे लोग लम्बा शो नहीं दिखा सकते, चुटकले टाइप छोटे-छोटे शो तो बहुत बढ़िया करते हैं। जनता अस्थिर हो गई बड़े शो देखने गम्भीर। दूसरे गम्भीर समीक्षक ने अपनी नाक आगे निकल कर कहा लम्बा शो दिखाने वालों, फंकने वालों से भी लोग उब जाते हैं, चैनल्स बदलने लगते हैं। इसलिए दूसरों को भी कलाकारी दिखाने का मौका दो। कम से कम दो चार को तो तैयार करो जो इमरजेंसी जैसी स्थिति में काम आ जायें।

चैनल वाले बोले, पिक्चर हाल में तालियों की गड़गड़ाहट तो जोनी वाकर, महुमूद, जगदीप, मुकरी ओर वो जो गुजरात के कौन है रावल जी या ओर ——उनको ही मिलती है। समीक्षक तो बाद में लिखते रहते हैं कि पिक्चर इस या उस प्रमुख कलाकार की वजह से ही हिट हुई किन्तु तत्काल ताली तो हास्य अभिनेता को ही मिलती है। नाचे गए बन्दरी (मध्य किरदार), खार खाए फकीर (हास्य किरदार)। अगर मुख्य कलाकार कुछ गलत—सलत बोल दे तो सारा खेल बिगड़ जाता है और हास्य कलाकार सैकड़ों सालों के अलग-अलग समय के पात्रों को एक साथ बैठा कर गम्भीर धार्मिक संवाद भी करवा दे, लंका विजय और महाभारत एक काल में भी करवा दे, बात-बात में लाखों के बजाय करोड़ों को खुशहाल कर दे,—(चाहे दूसरे मुक्तों से ही आयातित करने पड़ें), आंख झपकने के साथ दूध की नदियां बहा दे, कंकक की जगह पहाड़ लोगों के गले उतर दे—वैसे भी परसाई जे ने कहीं लिखा है आत्म विश्वास धन, विद्या, बल का भी होता है किंतु सब से बड़ा आत्मविश्वास नामसही का होता है। तो भी लोग बड़ा दिल रख कर कह देते हैं—तो, इतना तो चलता है, आखिर

इन लोगों को भी सुबह से शाम कितना काम करना पड़ता है!!!!किसी डायलॉग में गलती हो गई तो क्या पिक्चर देखनी बंद कर दें। जो ऐसी बात भी कहे दे जिसका सिर पर न हो और उस पर भी लोगों से हंस कर ताली पीटवा ले, वही महानतम हास्य कलाकार है।

एक मुफ्त की सलाह देने वाले ने भी सलाह दे डाली—1, 2 साइड हास्य कलाकारों को तो कला प्रदर्शन का मौका तो मिलता रहना चाहिए। इमरजेंसी कभी आ सकती है। अगर जनता को एक के ही हास्य अभिनेता के शो देखने की लत लगाओ गे तो देर-सवेर नुकसान का भी खतरा हो सकता है।

जनता का क्या, कब पूड बदलने का ठान ले और ऐसा हुआ तो कई चैनल्स पर तो परमानेंट पदल फग सकता है। एक टेड अनाड़ी व्यक्ति ने उनकी बात की हामी भरते हुए कहा—यह साहब भी बात तो ठीक कह रहे हैं—पहले भी कई ऐसे शो हाउसफुल चलते-चलते अचानक आंधे धूल लिए हैं। पुरानी मारवाड़ी कहावत है, पुराने जमाने के परिवेश में जैसे शब्द चलते थे वैसे काम में लिए हैं (इसलिए कोउ बहन नाराज न हो)-----“बिना मोरी और बिना जीन की उंटनी, बिना मुंह बंद किए बोरी-बोरा-सलिया, नाते से आई पटरानी और जनता किसी की समी नही”

इसलिए हे चैनल वालो, अखबार वालों, आज छोटे दिखने वाले हास्य कलाकारों की भी कंठ करके रहेंगे तो फायदे में रहेंगे—आज के कुछ अति प्रसिद्ध हास्य कलाकारों की भी यह जुमला काम में लेते सुना होगा—/कायदे में रहेंगे तो फायदे में रहेंगे। “न काहू से दोस्ती, न काहू से बैर” —आनंद लो मस्त रहे।

—महावीर सिंह,
पूर्व आईएएस

कोटा की बेटों ने 10 देशों की सर्फिंग प्रतियोगिता में कीर्तिमान बनाया

कोटा, (निर्स) अंतरराष्ट्रीय सर्फिंग ओपन प्रतियोगिता का आयोजन भारत में पहली बार मामल्लापुरम में 14 से 20 अगस्त तक किया गया। यह प्रतियोगिता विश्व सर्फिंग लीग का हिस्सा है। यह प्रतियोगिता खेलों को बढ़ावा देने की दिशा में तमिलनाडु सरकार का एक और बड़ा काम है। इस अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता से भारतीय खिलाड़ियों को अपनी क्षमता



कोटा की बेटों ने सर्फिंग में बेहतर प्रदर्शन किया है।

गर्विता ने समुद्र की लहरों पर सर्फिंग के सफर में सहरानीय प्रदर्शन

दिखाने का मौका मिला। जिसमें कोटा की स्टेशन क्षेत्र स्थित जेपन मारशल फिल्टीयर्स प्रतियोगिता में सर्फिंग में बेहतर प्रदर्शन कर इतिहास रच दिया है। वर्तमान में वह बैंग्लोर स्टार्टअप में क्योर स्क्रीन में सीनियर प्रोडक्ट मैनेजर हैं। राजस्थान में वह इकलौती इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाली युवती थी जिन्होंने समुद्र की लहरों पर अपने दिल कोशिश से सभी को रोमांचित कर दिया। वह इससे पूर्व पंडिचेरी, वरकला, उडुपी, महाबली परम में सर्फिंग कर चुकी हैं।

कोटा की बेटों ने सर्फिंग में बेहतर प्रदर्शन किया है।

कोटा प्रदर्शन रहा सराहनीय—गर्विता बल्लुआ ने बताया कि यह अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता हमारे खिलाड़ियों को अपनी क्षमता दिखाने और हमारे देश को गौरवावित करने का शानदार मंच है। अंतरराष्ट्रीय सर्फ ओपन प्रतियोगिता में 10 देशों के 100 खिलाड़ी हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता की कुल इनामी राशि 45 हजार डॉलर है। इसमें एशिया और ऑस्ट्रेलिया के शीर्ष खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। गर्विता ने बताया कि वह टॉप 6 में रही। इस प्रतियोगिता में मलेशिया, जापान, सिंगापुर, भारत, ऑस्ट्रेलिया, मालदीव, श्रीलंका सहित अन्य देश थे। गर्विता ने बताया कि समुद्र में हर दिन कुछ नया होता है, लहरों का वेग और उतार-चढ़ाव बदलता है तो हवाओं का रुख भी इस खेल को प्रभावित करता है, लेकिन यह खेल संयम, बैलेंस और एकाग्रता सिखाता है, साथ ही सधर्ष, कड़ी मेहनत और समुद्र के विशालकाय स्वरूप में अपने आप को संभालने की हर तह से तैयार होने की प्रेरणा देता है। इस प्रतियोगिता की सफलता पर उन्हें 30 हजार का पुरस्कार भी दिया गया।

सरकारी विद्यालय बना अनुशासन की मिसाल

चूल्हू, (कासं)। आपाधापी और भाग-दौड़ के इस युग में एक शिक्षक दंपती के एक अनूठे नवाचार ने सरकारी विद्यालय को अनुशासन बनाए रखने की एक मिसाल बना दिया है।

उल्लेखनीय है कि पर्यावरण प्रेमी शिक्षक दंपती अमरसिंह किशानावत और मनीषा चारण के सौजन्य से 'अनुशासित रहो इनाम पाओ' कार्यक्रम राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बुधवली में



तीन वर्ष से चल रहा है 'अनुशासित रहो इनाम पाओ' कार्यक्रम

नेनेकों नवाचारों में यह एक अद्वितीय नवाचार है, जिसमें रोजाना प्रार्थना सत्र में पुरस्कार देकर विद्यार्थियों को अनुशासित रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। किशानावत के अनुसार इस अनूठे नवाचार का उद्देश्य विद्यार्थियों में अनुशासन की भावना का विकास करना और शिक्षा की मुख्यधारा में जोड़ना है। प्रधानाचार्य गिरधारी लाल स्वामी ने बताया कि अनुशासित रहो इनाम पाओ कार्यक्रम से विद्यार्थियों के अनुशासन में आशातीत सुधार हुआ है, साथ ही विद्यालय की समस्त शैक्षणिक और सहशैक्षणिक गतिविधियों में विद्यार्थियों की अभिप्रेरित विकसित हुई है। पर्यावरण प्रेमी शिक्षक दंपती अमरसिंह किशानावत और श्रीमती मनीषा चारण की ओर से विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाली को सम्मान आपके द्वार के तहत उम्मेद कर जाकर सम्मानित किया जाता है।

106 साल पुराने तीन दिवसीय श्रावणी झूला महोत्सव का समापन

लालसोट, (निर्स)। उपखंड क्षेत्र के डिडवाना ग्राम पंचायत मुख्यालय पर चल रहे 106 साल पुराने श्रावण झूला महोत्सव का मंगलवार को विधिवत समापन हुआ। तीन दिवसीय इस श्रावणी झूला महोत्सव में बाहर से आए हुए कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की छटा बिखेर कर आने वाले दर्शकों को भावविभोर किया गया। झूला महोत्सव आयोजन कमेटी से जुड़े राकेश सामोल्या ने बताया कि इस तीन दिवसीय झूला महोत्सव के दौरान स्थानीय युवाओं, ग्रामीणों की टोलियां द्वारा लगातार



लालसोट के डिडवाना ग्राम में आयोजित झूला महोत्सव समापन कार्यक्रम में उमड़ी श्रोताओं की भीड़।

लालसोट, (निर्स)। उपखंड क्षेत्र के डिडवाना ग्राम पंचायत मुख्यालय पर चल रहे 106 साल पुराने श्रावण झूला महोत्सव का समापन हुआ।

तीन दिवसीय इस श्रावणी झूला महोत्सव में बाहर से आए हुए कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की छटा बिखेर कर आने वाले दर्शकों को भावविभोर किया गया। झूला महोत्सव आयोजन कमेटी से जुड़े राकेश सामोल्या ने बताया कि इस तीन दिवसीय झूला महोत्सव के दौरान स्थानीय युवाओं, ग्रामीणों की टोलियां द्वारा लगातार

बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम झूला महोत्सव का आयोजन कर स्नेह मिलन आयोजित करते थे वहां वर्षों पुरानी इस झूला महोत्सव की परंपरा को आज भी प्राणीय निभाते चले आ रहे। इस दौरान आयोजन समिति के राकेश सामोल्या, राकेश मेडिवाला, सीताम सोनी, सूरजमल गुप्ता, मुरारी पाटीवाला, मुरारी सोनी, भागीरथ सोनी, हनुमान शर्मा, प्रकाश गंगा सहाय मुरारी, प्रकाश चोपड़ा, पंडित हेमू, शिवांग गुप्ता, चौधमल गुप्ता, मन्मू सोनी, प्रकाश पाटीवाला, अंगद, काल्या नातिव, राममेनेहर गुप्ता एवं प्राणीय मौजूद रहे।

राशिफल

बुधवार 30 अगस्त, 2023

पंडित अनिल शर्मा

द्वि. सावन मास (शुद्ध), शुक्ल पक्ष, चतुर्दशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् 2080, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 8:47 तक, अतिथि योग रात्रि 9:32 तक, वणिज करण दिन 10:59 तक, चन्द्रमा आज दिन 10:19 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरु-मेघ, शुक-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेघ, केतु-तुला राशि में।

राजयोग दिन 11:54 से रात्रि 8:47 तक है। भद्रा दिन 10:59 से रात्रि 9:02 तक है। वुध अस्त पश्चिम दिन 2:41 पर होगा। आज चान्द्र पूर्णिमा व्रत है। आज रक्षाबन्धन, हनुमत्पूजा जयन्ती, नारेली पूर्णिमा, वलभधर पूजा है। पंचक दिन 10:19 से आरम्भ होगा। आज रक्षाबन्धन रात्रि 9:02 के पश्चात मनया जायेगा।

श्रेष्ठ चौघडियां: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:18 तक, शुभ 10:53 से 12:27 तक, चर 3:37 से 5:12 तक, लाभ 5:12 से सूर्यास्त तक। राहूकार: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:08, सूर्यास्त 6:47

मेघ
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

तुला
परिजनो का व्यवहार अच्छा रहेगा। भावनात्मक कार्यों में मन:स्थिति में सुधार होगा। परिवार में शुभ-मौंगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेगे। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

वृश्चिक
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा।

मिथुन
धार्मिक-मांगलिक धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यक्ति परेशानियां अभी बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेगे। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कन्या
विवाह मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। आवश्यक धन खर्च होगा। मन में अस्तोच बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से अस्त-व्यस्त दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। परिवार में सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।